Mukt Shabd

UGC CARE JOURNAL

ISSN NO : 2347-3150

MUKt SHABd JOURNAL

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
UGC
University Grants Commission
Approved Journal List

Impact Factor : 4.6

A Peer Reviewed/ Referred Journal

Edited By
MSJ : Mukt Shabd Journal
http://shabdbooks.com/

Copyrights @ 2020 MSJ: All Rights reseved.

Editor in Chief: Sumit Ganguly

MSJ - Mukt Shabd Journal

Book: 2020: Volume IX, Issue III, MARCH - 2020
ISSN (Print): 2347-3150

This work is subjected to copyright. All rights are reserved whether the whole or part of the material is concerned, specifically the rights of translation, reprinting, re-use of illusions, recitation, broadcasting, reproduction on microfilms or in any other way, and storage in data banks. Duplication of this publication of parts thereof is permitted only under the provision of the copyright law 1965, in its current version, and permission of use must always be obtained from MSJ- Mukt Shabd Journal Sciences Violations are liable to prosecution under the copyright law.

© MSJ 2020

Typesetting: Camera-ready by author, data conversation by MSJ - Mukt Shabd Journal

हिंदी विभाग

32	हिन्दी स्वराज्य गाँधीजी की सामाजिक चेतना का अनोखा दस्तावेज -*प्रा.डॉ.दीपक विनायकराव पवार*	102
33	असगर वजहत के नाटक में गाँधी चिंतन की पडताल एवं संभावनाएँ -*डॉ. निम्मय ए.ए.*	105
34	हिंदी कविता में चित्रित गांधीवाद -*डॉ. बाळू भोपू राठोड*	109
35	धर्म और राजनीति के संदर्भ में महात्मा गांधीजी के विचार -*डॉ.माधव केरबा वाघमारे*	112
36	आधुनिक हिंदी साहित्य पर गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव -*डॉ.शेख शहेनाज अहेमद*	114
37	समकालीन साहित्यकारों पर गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव -*डॉ.शेखर घुंगरवार*	116
38	धर्मनिरपेक्षता और महात्मा गांधी -*डॉ. किरण व्यंकटराव आयनेनिवार*	119
39	वर्तमान परिदृश्य में मूल्यपरक शिक्षा में गॉधीजी के विचारों की विशेष भूमिका -*डॉ. प्रकाशिनी तिवारी*	121
40	150 वर्ष के बाद महात्मा गांधी -*डॉ. पंजाब चव्हाण, श्री.कदम गजानन साहेबराव*	124
41	महात्मा गांधी; भारतीय संविधान की संकल्पक -*डॉ. प्रभाकर जी. जाधव*	126
43	बहुमुखी तथा बहुआयामी गांधी -*डॉ. दत्ताहरी रामराव होनराव*	129
44	महात्मा गांधी 150 वी जयंती (महात्मा गांधी विचार) - *डॉ. गणेश इजळकर व मधुकर बोरसे*	131

▪▪▪▪▪

'आधुनिक हिंदी साहित्य पर गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव''

डॉ.शेख शहेनाज अहेमद
हिंदी विभागाध्यक्ष,
हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय हिमायतनगर, ता.हिमायतनगर, जि.नांदेड

महात्मा गांधी ने भारत भूमि की स्वाधीनता के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। वे जनमानस में अहिंसा,प्रेम,एकता,शांति,सद्भाव सर्वधर्म सम्भाव, समानता एवं एवं मानवता की भावना जागृत करने के लिए सतत संघर्षशील रहे। आदर्शो का प्रभाव जहाँ हिंदी के कथा - साहित्य पर संपूर्णता में व्याप्त हुआ है, वही कविता साहित्य भी अछूता नही रहा।

आधुनिक काल में जिस गति से जीवन के पूरावे मूल्य और आदर्शों का जिस प्रकार तिरस्कार ओर अपमानता का चलन हो उस गति से नए मूल्य और आदर्शो का निर्माण संभव नही हो रहा है। ऐसी स्थिति में गांधी के आदर्श और सिध्दांतो को साहित्य के लोगों तक पहुँचाकर कुछ हद तक पुराने आदर्श और सिध्दांतो को सुरक्षित रखा जाता है। आज के आधुनिक दौर में गांधी दर्शन से साहित्य का उपलब्ध होना कठिन होता है जा रहा है। और व्यक्ति विवेक से प्रेरित रचनाओं में वृध्दि होती जा रही है जो आनेवाली पीढ़ी के घातक सिध्द हो सकती है आज विश्व जिन परिस्थितियों के दौर से गुजर रहा है उन परिस्थितियों के समाधान की बात जब हम करते है तो गांधीजी के सिध्दांत ही अंतिम विकल्प के रूप में हमे दिखाई देते है।

भारतीय इतिहास में गांधी युग ऐसा काल रहा है जिस पर कई प्रकार के प्रभाव दृष्टिगोचार होते है। एक ओर परम्परागत विचार प्रभाव है तो दूसरी और अँग्रेजी सभ्यता और संस्कृति के प्रभाव के साथ-साथ युगीन गांधी विचारधारा का प्रभाव भी है। गांधी विचारधारा का तात्पर्य उन सिध्दांतों से है जिनका प्रचार-प्रसार महात्मा गांधीजीने सामुहिक जीवन में किया है। वे स्वंय अपने सिध्दांतो को 'वाद' कहने के पक्ष में नही थे। यही कारण है कि उनकी विचारधारा से प्रभावित साहित्य सम्पदा को गांधीवादी साहित्य के सीमित घेरे में बांधने का प्रयास नही किया गया है। गांधीजी ने अपना जीवन सत्य और सच्चाई की व्यापक खोज में समर्पित कर दिया। उन्होंने इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपने स्वंय की गलतियों और खुद पर प्रयोग करते हुए सीखने की कोशिश की। उन्होंने अपनी लड़ाई लड़ने के लिए अपने दुष्टताओ भय असुरक्षा जैसे तत्वों पर विजय पाना है। गांधीजीने अपने विचारों को जब संक्षेप में व्यक्तम किया तब उन्होंने अपनी आत्मकथा को सत्य के प्रयोग का नाम यिा गांधीजीने कहाँ कि सबसे महत्त्वपूर्ण लड़ाई लड़ने के लिए अपने विचारों को व्यक्त किया है। इस प्रकार सत्य में गांधी का दर्शन है 'परमेश्वर' महात्मा गांधी भारत की सहस्त्रब्दियों की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक गति के उज्ज्वल प्रतीक है भारत ने अपने दिर्घ जीवन की अवधि में आरंभ से अब तक विकास और सांस्कृति के क्षेत्र में जो कुछ अर्जन किया था उन सबका प्रतिनिधित्व करने के लिए ही मानो वह का अवतार हुआ है। पंडित जवाहरलाल नेहरुजी ने गांधी के महान व्यक्तित्व के संबंध में उचित ही कहाँ है, " एक बडी भारी पूर्ति की तरह वह हिंदुस्तान के इतिहास की आधी सदी में पाँव फैलाकर खडे है। वह बड़ी भारी पूर्ति शरीर की नही बल्कि मन और आत्मा की है।''

हिन्दी साहित्य पर महात्मा गांधी के प्रभाव को स्पष्ट एवं व्यापक रूप में देख सकते है। उनके चिंतन दर्शन राष्ट्र नवनिर्माण एवं स्वराज्य की कल्पना को हिंदी साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं का विषय बनाया। साहित्य समाज का दर्पण होता है और समाज में हो रही घटनाओं का समकालीन एवं उसके बाद के साहित्य पर प्रभाव पड़ना अनिवाय्र हो जाता है। गांधीजी अपने-आप में एक आंदोलन कर्ता थे एवं तत्कालीन राष्ट्रीय आंदोलन की घटनाओं के शांति के प्रणेता थे। अतः उनके द्वारा किए गए कार्यो को हिंदी साहित्यकारों ने साहित्य में स्थान दियाय एवं उनके मूल्यों एवं आदर्शो को साहित्य की प्रत्येक धारा में अभिव्यक्त किया। अतः गांधीजी के मूल्यों एवं आदर्शो का हिन्दी साहित्य में तत्वधारिता रूप में अपनाना आवश्यक होता है।

गांधीजी के अनुसार उनकी विचारधारा सत्य और अहिंसा का सिध्दांत है। व्यक्तिगत रूप से सत्य और अहिंसा की साधना से मनुष्य अध्यात्मिक उन्नति कर सकता है। और अपने लक्ष्य तक पहुँच सकता है। इससे स्पष्ट है कि गांधी दर्शन मनुष्य के कल्याण के लिए सांसारिक उन्नति को गौण और अध्यात्मिक उन्नति को मुख्य समझता है। गांधीवादी विचारधारा का उद्देश्य समाज की आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक व्यवस्था का संतुलन बनाए रखता है। गांधीजी के विचार में संतुलित ही रामराज्य का रूपधारण कर सकता है। गांधीजी अपने आदर्श और सिध्दांतो के आधार पर रामराज्य की स्थापना करना चाहते थे। महात्मा गांधी के इन विचारों का प्रभाव हम जैनेंद्र की 'वे तीन' शीर्षक कहानी में देखते है। गांधीजी के विचारों के प्रभाव को उनकी कहानियाँ फ्फाँसी', 'वातायन', 'एक रात', 'पाजेब' आदि में देख सकते है। साथ ही 'सूनीता

उपन्यास भी गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित उपन्यास है। गांधीजी का कहना था कि शुध्द सत्य की ओर अग्रेसर होने के लिए मनुष्य को अपनी अंतरात्मा की आवाज को समझना चाहिए जिससे हमारा जीवन शुध्द हो और हम शाश्वत सत्य को समझ सके। इस सत्य का चित्रण विष्णु प्रभाकरजी ने अपने कहानी संग्रह 'मेरी प्रिय कहानियाँ' में किया है। विष्णु प्रभाकरजी की कहानी 'वापसी' का नायक रामसिंह विद्वेषकी आग में जलते हुए सोचता है कि "मैं उसके परिवार को दर-दर का भीख मँगवाऊँगा, भिखारी बनाऊँगा।''लेकिन जब उसे सत्य का बोध होता है ओर आत्म ज्ञान चक्षु दृष्टि खुलती है तो वह घर में लगी आग से अपनी ज्ञान की साज़ी लगाकर सौतले भाइयों को बाहर निकालता है। यह ह्रदय परिवर्तन अचानक नहीं, बल्कि गांधीवादी दृष्टिकोण का ही प्रभाव है।

आधुनिक हिंदी साहित्यकारों में वासुदेव आठवले की कहानी 'मानवता की भेंट' स्वरूप कुमार बख्शी की 'कौडियों का नाच' कहानी में गांधी के सत्य तत्व की प्रतिष्ठा का प्रयास किया गया है। महात्मा गांधीने सत्य को सर्वश्रेष्ठ धर्म बताया है और अहिंसा को परम कर्तव्य। उनका कहना था कि सत्य की तरह अहिंसा भी सर्व शक्तिमान और असीम हैं, सत्य ही ईश्वर है। गांधीजी के इन विचारों का सम्यक निर्वाह विनोद शंकर न्यास की 'स्वराज्य कब मिलेगा?' कहानी में असहयोग आंदोलन वर्णन के प्रसंग में होता है। अहिंसा की अनिवार्यता आनंदप्रकाश जैन की 'देवताओं' की चिंता कहानी में दृष्टिगोचर होता है। चैतन्य भट की कहानी 'रंग मे भंग' पारसनाथ सरस्वती की कहानी 'अहिंसा विजय' इसी विचारधारा से ओतप्रोत है।सत्य की खोज के लिए गांधीजी ने सेवा को आवश्यक माना है। इस विचारधारा को आधुनिक साहित्यकारों ने बड़ी आत्मियता और तत्परता के साथ स्वीकार किया। इनमें बलदेव उपाध्याय की पतिव्रता का व्रत, स्वरूप कुमार की 'बुलबुल', 'कुरूप कन्या', 'प्यार कभी बूढ़ा नही होता,' सोमवीरा की 'धरती बेटी' आदि साहित्यकारों की कहानियों में मिलता है। बुलबुल कहनी की 'बुलबुल' नर्स बनकर सेवा करती साथ ही घायल पशु-पक्षियों की देखभाल करती है।

गांधीजी के समाज सुधार की दिशा में किए गए सुधार नदी उध्दार, सांप्रदायिक एकता, हरिजनोध्दार मद्यपान निषेध संबंधी विचार भी प्रशंसनीय है। सांप्रदायिकता को देश का प्रभाव प्रेमचंद और उनके साहित्यपर परिलक्षित होता है। प्रेमचंद्र ने स्वराज्य, समता औरर धर्म को एकत्रित कर साहित्य में समाजवाद का रूप सत्यं, शिवं, सुंदर में निहित किया है। प्रेमचंद ने अपने अंतिम और प्रसिध्द लेख 'महाजनी सभ्यता' में कहाँ है - "धन्य है वह समता जो मालदारी और व्यक्तिगत संपत्ति का अंत कर रही है... पर जो सत्य एक दिन उसी की विजय होगी।" विष्णु प्रभाकर की 'सुराज' कहानी में स्वतंत्रता प्राप्ति बाद का संघर्ष'धरोहर' में बंगाल के अकाल, 'आजादी' में गांधीजी का स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु किया गया संघर्ष, 'मेरा पतन' में राष्ट्रीय प्रेम औरर 'भारत माता की जय' में साम्प्रदायिक दंगे के वर्णन में प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।गांधीजीने अस्पृश्यता निवारण का व्रत लिया था। उनका मानना था सभी जीव ईश्वर की संतान है। वह हरिजनों का उध्दार करना चाहते थे। इसका प्रभाव लक्ष्मीनारायण की 'आनेवाला कल' में दिखाई देता है। प्रेमचंद ननने गोदान में दलितों का वर्णन दमितपात्र के रूप में नही किया है - सिलिया का बाप ठाक्कर झिंगुरी सिंह से कहता है कि "झगड़ा कुछ नही है ठाकुर, आज हम मातादीन को चमार बनाकर छोडेंगे या उनका अपना रकत एक कर देंगे।" इतना ही नही गांधीजी ने दहेज प्रथा, नारी उध्दार, वेश्या वृत्ति समस्या, विधवा विटा और नारी शिक्षा पर भी बल दिया था। इन सभी समस्यायों को साहित्यकारों ने अपनी कहानी और उपन्यास के विषय बनाएँ। सोमवीरा की 'बिदिया' और रेत के टिले में विधवा समस्या को रेखांकित किया गया है। दहेज की समस्या 'आँखो का कौतुक' कहानी में वर्णन किया गया है। वेश्यावृत्ति की समस्या को प्रेमचंद ने अपने उपन्यास सेवासदन में उजागर किया है। इसी के साथ इलाचंद जोशी, विष्णु प्रभाकर, उपेंद्रनाथ अश्क, विनोद शंकर व्यास आदि ने भी अपनी कहानी और उपन्यास में वेश्या समस्या से संबंधित चित्र खींचे हैं।

इस प्रकार हम देखते है कि आधुनिक हिंदी साहित्य पर गांधीजी का प्रभाव पूरी परिशुध्दता के साथ व्याप्त है। महात्मा गांधीजीने अपना संपूर्ण जीवन भारत भारत भूमि की स्वाधीनता के लिए समर्पित कर दिया। वे जनमानस में सत्य, अहिंसा, प्रेम, शांती, एकता, सर्व धर्म, सद्भाव समानता एवं मानवता की भावना को जागृत करने के लिए सतत संघर्षशील रहे। अमीरी-गरीबी और छुआछुत, अन्याय, उत्पीडन से भारतीयता को बाहर निकालने का प्रयास किया। अतः हिंदी साहित्य पर उनके विचारों को हिंदी के अधिकांश साहित्यकारों ने अपनाया और अपनी रचनाओं का विषय बनाया।

1) भारत की खोज - पंडीत जवाहरलाल नेहरू
2) साहित्य का श्रेय और प्रेय - जैनेंद्रकुमार
3) सेवासदन - प्रेमचंद
4) आधुनिक साहित्य - नंदकलारे वाजपेयी
5) अच्छी कहानियाँ संग्रह संपादिका - शचीरानी गुर्टू - पृ.59
6) साहित्य जिज्ञासा, - ललित प्रसाद शुक्ल
7) जैनेंद्र व्यक्तिमत्व एंव कृतित्व - सत्यप्रकाश मिलिंद - पृ.224

■■■■■